आम की खेती

- विटामिन A का अच्छा स्रोत
- आम का जन्म स्थान भारत-म्यांमार क्षेत्र
- शुष्क मौसम तथा फलो के पकते समय काफी गर्मी पड़ती है, ऐसे स्थान, खेती के लिए सर्वोत्तम

प्रजातियाँ

❖ मल्लिका	❖ आम्रपाली
❖ सिंधु	❖ मधुलिका
❖ अरुणिमा	❖ सौरभ
❖ गौरव	❖ राजीव
❖ दशहरी	❖ लंगड़ा
❖ चौसा	❖ नीलम
❖ बम्बई हरा	❖ फजरी

भूमि की तैयारी
या
गड्ढो की तैयारी

- अच्छी बढ़वार एवं उपज के लिए दोमट मिट्टी अच्छी
- अच्छी वृद्धि के लिए 2-2.5 मीटर गहरी मृदा की आवश्यकता
- गड्ढे तैयार करने के लिए सर्वप्रथम मई-जून के महीने में खेत की जुताई

- पौधों की रोपाई के लिए, किस्म के अनुसार 10-12 मीटर की दूरी पर, 1x1x1 मीटर पर गहरे गढ्ढे तैयार करते है
- इन गड्ढो को तेज धूप में लगभग 15 दिन खुला छोड़ देना चाहिए

- तैयार गड्ढो में पौध लगाने के 15-20 दिन पूर्व 35-40 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद, 250 ग्राम सुपर फास्फेट तथा 40-50 ग्राम फॉलीडाल धूल मिट्टी में मिलाकर गड्ढो को भरते है

पौध रोपण का समय एवं विधि

- रोपण जुलाई-अगस्त माह में उपयुक्त मानते है
- सिचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर पौधे मार्च में भी लगाये जा सकते है
- जिन क्षेत्रो में बरसात अधिक होती है, वहां रोपण बरसात के अंत में करना चाहिए

- एक वर्ष पुराने सीधे बढ़ने वाले पौधों को, जिनमे कलम का स्थान अच्छी तरह से जुड़ा हो रोपण के लिए चुनाव करना चाहिए
- चुनाव किये गये पौधे रोग रहित होने चाहिए
- पौधों को विश्वसनीय व प्रमाणित पौधशाला से ही लेना चाहिए

- बीजू पौधों को 15X15 मीटर की दूरी पर लगाना चाहिए
- आम्रपाली को 2.5X2.5 मीटर की दूरी पर लगाना चाहिए
- पौध रोपण के लिए तैयार किये गये गड्ढे के बीचो-बीच, पौधे की पिण्डी के बराबर गड्ढा खोदकर पौधे लगाना चाहिए

खाद एवं उर्वरक

आयु (वर्ष)	गोबर की खाद (किलोग्राम)	नत्रजन ग्राम	फास्फोरस ग्राम	पोटाश ग्राम
1	10	100	75	100
2	20	200	150	200
3	30	300	225	300
4	40	400	300	400
5	50	500	375	500

आयु (वर्ष)	गोबर की खाद (किलोग्राम)	नत्रजन ग्राम	फास्फोरस ग्राम	पोटाश ग्राम
6	60	600	450	600
7	70	700	525	700
8	80	800	600	800
9	90	900	675	900
10 और अधिक	100	1000	750	1000

आयु (वर्ष)	कापर सल्फेट	ज़िंक सल्फेट	बोरेक्स
1	25	25	--
2	50	50	--
3	75	75	--
4	100	100	--
5	125	125	125

आयु (वर्ष)	कापर सल्फेट	ज़िंक सल्फेट	बोरेक्स
6	150	150	150
7	175	175	175
8	200	200	200
9	225	225	225
10 और अधिक	250	250	250

- उर्वरको को पेड़ के चारो ओर मुख्य तने से 1 से 1.5 मीटर की दूरी पर डालकर मृदा में मिला देना चाहिए
- नत्रजन की मात्रा को दो बार में पहली जनवरी एवं दूसरी मार्च में देना चाहिए
- फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा दिसम्बर माह में देना अच्छा रहता है

सिचाई

- बड़े पेड़ो की सिचाई दिसम्बर-जनवरी में 20-25 दिन के अंतर पर
- पेड़ो में बौर आते समय सिचाई नहीं करनी चाहिए
- बड़े पेड़ो की सिचाई कूड़ विधि से करनी चाहिए

खरपतवार नियंत्रण तथा छटाई

- वर्ष में कम से कम दो बार जुताई तथा दिसम्बर में आम के थालो की सफाई व गुड़ाई करनी चाहिए
- छोटे पौधों को आरम्भ से ही काट-छाँटकर सुडौल बना लिया जाता है

- अक्टूबर-नवम्बर में सभी सूखी, बीमार तथा झुकी हुई डालियों को छाँट देना चाहिए
- पौधों को पाले से बचने के लिए उचित प्रबंध करना चाहिए

फल लगना

- आम में फूल 1 वर्ष पुरानी टहनियों की अग्र कलिकाओं पर आते है
- कलमी पौधे पांच वर्ष में फल देने लगते है जबकि बीजू पौधों में 10 या 12 वर्ष बाद फल आने आरम्भ होते है
- पुराने पेड़ो में एकान्तरित फलत

रोग नियंत्रण

- पाउडरी मिल्ड्यू
- ब्लैक टिप या कोयलिया रोग
- इंटरनल नेक्रोसिस
- गमोसिस

पाउडरी मिल्ड्यू

- यह रोग फफूंदी के कारण होता है
- इस रोग में फूलो, फलो और पत्तियों पर सफ़ेद चूर्ण जैसी फफूंदी उत्पन्न हो जाती है, जिससे फूल सूखकर गिर जाते है

नियंत्रण

- डाइनोकैप एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी या घुलनशील गंधक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव

ब्लैक टिप या कोयलिया रोग

- फल का निचला सिरा मुलायम पड़कर काला हो जाता है, जोकि बाद में सख्त हो जाता है
- रोग ईट के भट्टे के धुएं से निकली सल्फर डाई आक्साइड गैस द्वारा होता है।
- रोग अप्रैल-मई में अधिक देखा जाता है

नियंत्रण

- नये बागो को ईट के भट्टो से 2 किलोमीटर से अधिक दूरी पर लगाना चाहिए
- फलो पर इस रोग का प्रकोप दिखाई दे तो 6-10 ग्राम बोरेक्स तथा 6 ग्राम कपडा धोने का सोडा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर दो छिड़काव करना चाहिए

- पहला छिड़काव जब फल कांच की गोली के बराबर हो जाये तथा दूसरा छिड़काव, पहले छिड़काव के 15 दिन बाद

इंटरनल नेक्रोसिस

- बोरोन की कमी के कारण
- पहले फल के ऊपर बूंद के समान स्राव दिखाई देता है बाद में यह भाग जलीय धब्बो के समान हो जाता है तथा अंत में भूरा होकर अंदर गूदा सड़ने के कारण बीज के किनारे काले हो जाते है
- रोग ग्रसित फल परिपक्ता से पूर्व ही गिर जाते है

नियंत्रण

- 6-10 ग्राम बोरेक्स तथा 6 ग्राम कपडा धोने का सोडा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर दो छिड़काव करना चाहिए
- पहला छिड़काव जब फल कांच की गोली के बराबर हो जाये तथा दूसरा छिड़काव, पहले छिड़काव के 15 दिन बाद

गमोसिस रोग

- सूक्ष्म तत्व जिंक, तांबा, बोरान तथा कैल्शियम की कमी के कारण दैहिक असंतुलन के कारण
- ग्रसित वृक्ष की छाल में हल्की दरारे बन जाती है जिनमे से गोंद की छोटी-छोटी बूंदे निकल कर दरारों को ढक लेती है

नियंत्रण

- 10 वर्ष या अधिक आयु के पड़ो के थालो की मिटटी में 250 ग्राम नीला तूतिया, 250 ग्राम ज़िंक सल्फेट, 125 ग्राम सुहागा तथा 100 ग्राम बुझा चूना का मिश्रण अच्छी तरह मिलाकर हल्की सिचाई करनी चाहिए

कीट नियंत्रण

मैंगो हापर

- छोटा तिकोना शरीर वाला कीट है
- फूलो एवं नई पत्तियों से रस चूसता है जिसके कारण फल कम लगते है

नियंत्रण

- क्यूनालफास 25 ई.सी. की 2 मिलीलीटर मात्रा या मोनोक्रोटोफास 40 ई.सी. की 1.5 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 3 छिड़काव
- पहला छिड़काव बौर के 2-3 इंच की अवस्था पर, दूसरा छिड़काव पहले के 15-20 दिन बाद तथा तीसरा फल के सरसों के दाने की अवस्था पर

मैंगो मिलीबग

- शिशु और प्रौढ़ मादा कोमल टहनियों व फूलो के डंठल तथा बौर का रस चूसते है।
- मादा अप्रैल-मई में वृक्ष से उतर कर जमीन में लगभग 15 सेंटीमीटर की गहराई पर अण्डे देती है।
- अन्डो से दिसम्बर-जनवरी में शिशु निकलते है

नियंत्रण

- मई जून के माह में बाग की गहरी खुदाई करनी चाहिए

शल्क कीट

- शिशु और प्रौढ़ कोमल टहनियों व पत्तियों की निचली सतह से चिपके रहते है तथा इनसे रस चूसते है

नियंत्रण

- क्यूनालफास 25 ई.सी. की 2 मिलीलीटर मात्रा या मोनोक्रोटोफास 40 ई.सी. की 1.5 मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 2 छिड़काव
- पहला छिड़काव बौर निकलने के बाद की अवस्था पर तथा दूसरा फल के सरसों के दाने की अवस्था पर

आम का तना बेधक

- गिडारे तने को छेद कर सुरंग बना देती है जिससे पेड़ कमजोर हो जाता है
- उग्र प्रकोप में पेड़ सूख जाते है।

नियंत्रण

- कीटो द्वारा बनाये गये छिद्रो में नुकीला तार डालकर घुमाना चाहिए, जिससे कीट छेद के अंदर ही मर जाये
- मोनोक्रोटोफास की 0.05% घोल को प्रति छिद्र के हिसाब से डालकर छेद को गीली मिट्टी से बंद कर देना चाहिए

शूट बोरर

- सुंडियां अंडे से निकलकर मुलायम पत्तियों की मध्य शिरा के अंदर छेद करके घुस जाती है
- कीट का प्रकोप मार्च-अप्रैल तथा अगस्त-अक्टूबर तक रहता है

तुडाई एवं उपज

- उत्तरी भारत में फल जून से जुलाई तक पकते है
- परिपक्व फलो की तुड़ाई डंठल के साथ करनी चाहिए
- तुड़ाई के समय फलो को चोट व खरोच न लगने दे

- रोगो एवं कीटो से पूरे प्रबंधन पर प्रति पेड़ लगभग 150 किलोग्राम से 200 किलोग्राम तक उपज प्राप्त हो सकती है